आज की अव्यक्त मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ----- Date:26-10-14

समाप्ति का आधार है विजयी रत्न आत्माओं की सम्पन्नता पर.

आज भी कई आत्माये यह बात पर मुझती है की विनाश कब होगा? या सतयुग कब आयेगा? या कब तक बापदादा का पार्ट चलेगा? आज की अव्यक्त मुरली में यही प्रश्नों के उत्तर बापदादा ने दिये हैं.

बापदादा ने मुरली के शुरुआत में कहा - हरेक बच्चे के अन्दर विशेष उमंग है - स्वयं को सम्पन्न बनाकर विश्व का कल्याण करने का (यानी बच्चों में उमंग है सतयुग में जाने का).

बापदादा ने आगे कहा, इसके लिए बच्चों के अन्दर जो छोटी-छोटी कमजोरियां रही हुई है उसको सदा-काल के लिए समाप्त करना होगा और इसका साधन है विदाई की हुई कमजोरियों से अनुभव हुई बधाई को हर रोज अमृतवेले स्मृति में लाकर समर्थी स्वरूप बनना. जितना हम स्वयं समर्थी स्वरूप बनते जायेंगे उतना हम अपनी रही हुई कमजोरियों को भी समाप्त कर पायेंगे. जितना हम स्वयं समर्थी स्वरूप बनते जायेंगे उतनी सेवा में भी हम समर्थी स्वरूप होंगे.

एक और विनाशकारी गृप, साइन्स की ऑथोरिटि से विश्व की अनेक आत्माओं को शारीरिक और मानसिक पिड़ाओं से बचाकर सेकण्ड में अपना शरीर छोड़ दे इसके लिए सहज साधन बना रहे हैं. ऐसे बाबा के बेहद के कार्य में निमित बनी हुई हम मास्टर ऑलमाईटि ऑथोरिटि गृप की आत्माओं को, सारे विश्व की आत्माओं को जन्म-जन्मान्तर के लिए माया के बन्धन से, माया द्वारा प्राप्त हुए अनेक प्रकार के दुखो से, एक सेकण्ड में मुक्त करने (मुक्ति में जाने वाली आत्माओं के लिए) वा सदा-काल के लिए सुख-शांति का (जीवनमुक्ति में जाने वाली आत्माओं क लिए) वरदान देने, हरेक आत्मा को ठिकाने लगाने के लिए एवररेडी रहना हैं. ऑडर मिला और कार्य सम्पन्न हुआ. जब ऐसे स्थापना का कार्य करने वाली आत्माये सम्पन्न हो जायेंगे तो विनाशकारीयों को भी ऑडर मिल जायेगा.

ब्रहमाबाप और शिवबाप के बिच में हुई आपस की रुह-रिहान से यही समझ होती है की,

- मुक्ति का गेट खोलने के जवाबदार तो ब्रह्मा बाबा है लेकिन उन्हें शिवबाबा से परमीशन लेनी हैं.

- मातेले और सौतेले बच्चों के दुखों को देख ब्रहमाबाप को रहम आता है पर शिवबाप उन्हें समझाते है कि अभी भी ब्रहमाबाप के साथ भिन्न-भिन्न स्वरूप से साथ और सम्बन्ध में रहने वाली श्रेष्ठ विजयी रत्न आत्माये तैयार नहीं हुई है या सम्पन्न नहीं बनी हैं. इसलिए मुक्ति के गेट नहीं खुले.

ब्रहमाबाप के साथ-साथ मुक्ति के गेट का उद्घाटन करने वाले, ब्रह्मा बाप के संकल्प को पुरा करने वाले, श्रेष्ठ विजयी रत्न आत्माओं का कर्तव्य --

अभी विश्व की मैजोरिटी आत्माये आत्मिक शांति और सत्यता की खोज में दर-दर भटक रही हैं. ऐसी आत्माये प्राप्ति की प्यासी है. ऐसी प्यासी आत्माओं को आप ज्ञान कलश धारी आत्माये, आत्मिक परिचय और परमात्म परिचय की यथार्थ बूंद पिलाकर तृप्त करो. इसलिए ज्ञान अमृत कलश सदा साथ रखो और सर्व को ज्ञान अमृत पिलाकर अमर बनाते चलो. अमर भव के वरदानी मूर्त बनो.

दूसरी कई कमजोर ब्राह्मण आत्माये, अपने पुरुषार्थ में अति कमजोर हैं. ऐसी कमजोर आत्माओं में पुरुषार्थ करने की भी हिम्मत नहीं हैं. ऐसी आत्माओं को स्वयं की शक्तिओं द्वारा समर्थ बनाकर प्राप्ति कराओ.

इस कार्य में सफलता मूर्त बनने के लिए, एक ही भाषा हो, सर्व के प्रति संकल्प से, वाणी से वरदानी भाषा हो. वरदानी मूर्त हो, वरदानों की वर्सा के भाषण हो. जो भी सुने वह कहे भाषण नहीं वरदानों के पुष्पों की वर्सा हो रही हैं. तब ब्रहमाबाप के साथ मुक्ति के गेट खोलने के जवाबदार बनेंगे. ॐ शांति.